100

SET – C

[This question paper contains 3 printed page]

Sr. No of question paper: 10387 Roll No.....

Unique Paper Code : 2143200005

Name of the Paper : Art of Translation

Name of the Course : Urdu (Hons.) DSE

Semester : VII

Time : 3 Hours M. Marks :90

Write your Roll No.on the top immediately on receipt of the question paper.

نوٹ: صرف پانچ سوالوں کے جواب لکھیے۔ آخری سوال لازمی ہے۔ سبھی سوالوں کے نمبر مساوی ہیں۔

1۔ ترجمے کے فن پر اظہارِ خیال کیجیے۔ بنیادی زبان اور مطلوبہ زبان کی وضاحت کیجیے۔

2۔ ترجمے کی ضرورت اور اہمیت پر اظہارِ خیال کیجیے۔

3۔ آزاد ترجمے اور لفظی ترجمہ کی وضاحت کیجیے۔

4۔ ترجمے میں لغت اور دوسری حوالہ جاتی کتب کی ضرورت پر اظہارِ خیال کیجیے۔

5۔ اردو میں ترجمہ نگاری کی روایت پر ایک مضمون لکھیے۔

6۔ ایک اچھے مترجم میں کن خوبیوں کا ہونا ضروری ہے؟

7۔ ترجمے کے عمل میں کن کن اقدامات کو شامل کیا جاتا ہے؟

8۔ کسی ایک اقتباس کا اردو میں ترجمہ کیجیے:

(الف)

Garbage is a great environment hazard. It comes from various sources—used paper, tiffin packing's, plastic bags, ice-cream wrappers, bottle caps, fallen leaves from trees and many more. Garbage makes the premises ugly and breeds diseases.

A lot of trash that is thrown away contain material that can be recycled and reused such as paper, metals and glass which can be sent to the nearest recycling centre or disposed of to the junk dealer. It also contains organic matter such as leaves which can enrich soil fertility. A compost pit can be made at a convenient location where the refuse can be placed with layers of soil and an occasional sprinkling of water. This would help decomposition to make valuable fertilizer. This would also prevent pollution that is usually caused by burning such organic waste.

(ب)

वायु प्रदुषण का सबसे अधिक प्रकोप महानगरों पर हुआ है। इस का कारण है, बढ़ता हुआ औद्योगीकरण। गत बीस वर्षों में भारत के प्रत्येक नगरों में कारखानों की जितनी तेज़ी से वृद्धि हुई है, उससे वायु मंडल पर बहुत प्रभाव पड़ा है। क्योंकि इन कारखानों में चिमनियों से चौबीसो घंटे निकलने वाला धुएं ने सारे वातावरण को विषाक्त बना दिया है। इस के अलावा सड़को पर चलने वाले वाहनों की संख्या में तेज़ी से होने वाली वृद्धि भी वायु-प्रदूषण के लिए पूरी तरह उत्तरदायी है। इन वाहनों के धुएं से निकलने वाली 'कार्बन मनो ऑक्साइड गैस' के कारण आज न जाने कितने प्रकार की साँस और फेफड़ो की बीमारियाँ आम बात हो गई है। इधर बढ़ती हुई जनसँख्या, लोगों का काम की तलाश में गाँवों से शहरो की ओर भागना भी वायु-प्रदूषण के लिए अप्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी है। शहरों की बढ़ती जनसंख्या के लिए आवास की सुविधाएँ उपलब्ध करने क लिए वृक्षों ओर वनों को भी निरंतर काटा जा रहा हैं। वायु-प्रदूषण को बचाने वाले कारणों की हमें खोज करनी चाहिए। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाने चाहिए।

.....